नोबल पुरुस्कार विजेता महिलाएं

# मेरीड कॉरीगन

और

# बेट्टी विलियम्स

## आयरिश शांति दूत

# मेरीड कॉरीगन और बेट्टी विलियम्स

## आयरिश शांति दूत

बेट्टी विलियम्स (बाएं) और मेरीड कॉरीगन (दाएं) दोनों नार्थ आयरलैंड पीस मूवमेंट की नेता. वे अपनी ध्वस्त कार के पास खड़ी हैं. शांति रैली ने बाद एक उत्तेजित भीड़ ने उनपर आक्रमण किया.

### मुख्य घटनाएं

1976 शांति आन्दोलन की शुरुआत
1977 शांति के लिए नोबल पुरुस्कार से सम्मानित
1978 शांति आन्दोलन से इस्तीफ़ा
1981 जेम्स मिककुआयर से शादी
1982 बेट्टी का दूसरे पति जेम्स पर्किन्स से विवाह
1994 मेरीड का पूर्वी टिमोर में हालात पर आन्दोलन

### शुरू के साल

मेरीड और बेट्टी दोनों का जन्म बेल्फास्ट में हुआ – जो उत्तरी आयरलैंड की राजधानी है. दोनों रोमन कैथोलिक थीं और दोनों कैथोलिक स्कूलों में पढ़ीं थीं. बचपन में दोनों एक-दूसरे को बिल्कुल नहीं जानती थीं, पर उनमें काफी कुछ समानता थी.

बेल्फास्ट में ज़्यादातर कैथोलिक्स, प्रोटोस्टेंट लोगों से अलग रहते थे. मेरीड के माता-पिता फाल्स नामके इलाके में रहते थे जो पश्चिमी बेल्फास्ट में स्थित था. वो एक बहुत गरीब इलाका था और वहां के घर बहुत जर्जर हालत में थे. मेरीड को चौदह साल की उम्र में स्कूल छोड़ना पड़ा, क्योंकि उसके माता-पिता स्कूल की फीस देने में असमर्थ थे. मेरीड ने कुछ बरस एक फैक्ट्री में काम किया. फिर बाद में उसे एक सेक्रेटरी की नौकरी मिली.

बेट्टी भी एक कैथोलिक इलाके में रहती थे. उसने सेक्रेटरी के काम की ट्रेनिंग ली थी. बाद में उसने एक अंग्रेज़ नाविक से शादी की और वतन लौटने से पहले उसने कई बरस विदेशों में बिताए. बेट्टी की माँ कैथोलिक थीं, पर उसके पिता प्रोटोस्टेंट थे. इसलिए दोनों समुदायों में बेट्टी के दोस्त थे. जब कैथोलिक और प्रोटोस्टेंट, बेल्फास्ट की सड़कों पर एक-दूसरे से लड़ते थे तो बेट्टी बड़ी दुखी होती थी.

### पृष्ठभूमि

बारहवीं शताब्दी से आयरलैंड में लड़ाई ज़ारी है. तब इंग्लैंड ने पहली बार आयरलैंड के द्वीप पर आक्रमण किया था. 17वीं शताब्दी तक आयरलैंड ब्रिटिश शासन के अंतर्गत था. प्रथम महायुद्ध के बाद ब्रिटेन ने लगभग पूरे आयरलैंड को स्वशासन की अनुमति प्रदान की. यह 1922 में हुआ जब 26 कैथोलिक देशों ने मिलकर आयरिश फ्री स्टेट की स्थापना की. बाकी छह देश मूलतः प्रोटोस्टेंट और ब्रिटेन के पक्ष में थे. वे ब्रिटेन के साथ रहे और उन्होंने उन्होंने अपना नाम बदलकर नार्थअर्न आयरलैंड रखा. आज फ्री स्टेट एक अलग देश है और उसका नाम रिपब्लिक ऑफ़ आयरलैंड है, जबकि नार्थअर्न आयरलैंड अभी भी इंग्लैंड का हिस्सा है.

## पृष्ठभूमि

### आयरिश कैथोलिक्स और प्रोटोस्टेंटस

धर्म ने आयरलैंड को दो अलग-अलग विरोधी हिस्सों में बांटा है. इंग्लैंड और स्कॉटलैंड की तरह आयरलैंड सोलहवीं शताब्दी में प्रोटोस्टेंट नहीं बना. आयरलैंड में कैथोलिक धर्म का ही वर्चस्व रहा. पर आयरलैंड पर आक्रमण करने वाले देश इंग्लैंड और स्कॉटलैंड प्रोटोस्टेंट थे. समय गुजरने के साथ आयरलैंड में बसे प्रोटोस्टेंट लोग खुद को ब्रिटिश समझने लगे, जबकि वहां के कैथोलिक्स ने इसका विरोध किया. आयरलैंड में अधिकतर राजनेता और ज़मींदार प्रोटोस्टेंट थे, जिससे मामला और उलझा. वे ऐसे नियम-कानून बनाते थे जिससे उनके समुदाय के लोगों को लाभ होता था. पर नार्थअर्न आयरलैंड में बहुत से कैथोलिक्स भी रहते थे. 1960 तक वहां कैथोलिक्स की आबादी एक-तिहाई हो गई थी, पर तभी भी वहां पर प्रोटोस्टेंटस का नियंत्रण था. इसके कारण वहां कैथोलिक्स और प्रोटोस्टेंटस के बीच झगड़े बढ़े और हिंसा भड़की.

## कुशलता विकास

जिन सालों में बेट्टी और मेरीड बड़ी हो रही थीं, तब हिंसा अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई थी. कुछ लोगों के घर जला कर राख कर दिए गए थे और उन दंगों में कैथोलिक और प्रोटोस्टेंट दोनों मारे गए थे. कैथोलिक लोगों की ओर से हिंसा की कमान उनकी एक गुप्त संस्थान आयरिश रिपब्लिकन आर्मी (IRA) के हाथ में थी. प्रोटोस्टेंट लोगों के लड़ाकू समूह था – अल्स्टर डिफेन्स लीग (UDL).

1960 में हालात इतने बिगड़ गए कि वहां शांति बनाए रखने के लिए ब्रिटेन को अपने सैनिक भेजने पड़े. ब्रिटिश सैनिकों को निष्पक्ष काम करने के आदेश दिए गए थे, पर वे अक्सर प्रोटोस्टेंट लोगों की तरफदारी करते थे. बहुत से कैथोलिक ब्रिटिश सैनिकों को अपना दुश्मन समझते थे. बेट्टी और मेरीड ने अपने बचपन में ब्रिटिश सैनिकों को कई बार उन कैथोलिक बच्चों को पीटते हुए देखा था जिन्होंने उन पर पत्थर फेंके थे.

मेरीड को खुद ब्रिटिश सैनिकों से डर लगता था, जबकि प्रोटोस्टेंट लोगों के खिलाफ उसमें कोई घृणा नहीं थी. चौदह साल की उम्र से वो एक ऐसे कैथोलिक ग्रुप की सदस्य बनी थी जो अन्य लोगों की मदद करते थे. इस काम के कारण ही उसका संपर्क ऐसे प्रोटोस्टेंट लोगों के साथ हुआ जो खुद जनहित के काम के लगे थे. बेट्टी भी एक प्रोटोस्टेंट पादरी के साथ काम कर रही थी. पादरी, कैथोलिक और प्रोटोस्टेंट दोनों समुदायों को एक-साथ लाना चाहते थे.

बेट्टी और मेरीड दोनों चाहतीं थीं कि हिंसा और लड़ाई बंद हो. पर उन्हें लगने लगा था कि वो उसमें कोई प्रभावी भूमिका नहीं निभा पाएंगी. उन्हें लगता था कि अन्य लोग उस काम में पहल लेंगे.

पर 10 अगस्त 1976 को उनका यह नजरिया बदला. उस दिन मेरीड की बहन ऐनी अपने तीनों बच्चों के साथ बाहर टहलने गई थी. एक IRA की कार जिसके ड्राईवर को ब्रिटिश सैनिकों ने गोली मारी थी उनसे आकर टकराई. उसमें तीनों बच्चे मारे गए और उनकी माँ बुरी तरह घायल हुई. तब मेरीड ने टेलीविज़न पर लोगों से हिंसा बंद करने और IRA की निंदा करने की अपील की. इससे बहुत बड़ा बवाला मचा, क्योंकि कैथोलिक लोग आमतौर पर IRA के खिलाफ कभी बोलते नहीं थे.

इस दुर्घटना का बेट्टी पर भी बड़ा असर पड़ा. वो उस समय मौके पर मौजूद थी और उसने IRA की कार को बच्चों से टकराते हुए देखा था. उसके बाद बेट्टी ने घर-घर जाकर लोगों से एक अपील पर हस्ताक्षर लिए जिसमें हिंसा बंद करने को समर्थन की बात लिखी थी.

दो दिनों में बेट्टी ने अपने प्रयासों से 6000 से ज्यादा हस्ताक्षर इकट्ठे किये. उसने टेलीविज़न पर भी अपनी अपील को पढ़ा. जब मेरीड को इसके बारे में पता चला तब उसने बेट्टी को बच्चों के अंतिम संस्कार के लिए आमंत्रित किया. तब पहली बार इन दोनों महिलाओं की भेंट हुई. तब उन्होंने यह निर्णय लिया कि नार्थअर्न आयरलैंड में शांति स्थापना के लिए वो मिलकर जो भी संभव होगा वो प्रयास करेंगी.

*"मेरे इलाके के जो युवा मर्द और लड़के हिंसक और हत्यारे बन गए थे, उन्हें समाज हीरो का दर्ज़ा दे रहा था." - बेट्टी विलियम*

*मेरीड ने कहा कि वो अपने देश में शांति स्थापित करने के लिए अपनी जान को भी दांव पर लगा देगी.*

## नोट्स

- बेट्टी बाद में अमरीका चली गई
- 1969 और 1975 के बीच दंगों के कारण आयरलैंड में 1400 से ज्यादा लोगों की मौत हुई या वे घायल हुए. पर 1977 तक यह संख्या घटकर आधी हो गई थी.

## उपलब्धियां

बेट्टी और मेरीड दोनों ने शुरू में एक ग्रुप स्थापित किया जिसका नाम था *वीमेन फॉर पीस.* बाद में उसका नाम बदलकर *कम्युनिटी फॉर पीस पीपल* पड़ा. दो हफ़्तों में उनके तीस हज़ार सदस्य बन गए, जिनमें दोनों कैथोलिक और प्रोटोस्टेंट समुदाय के लोग शामिल थे. वे रोजाना शांति मोर्चे और यात्रायें आयोजित करके उनमें नए सदस्य बनाते थे. उनकी एक रैली में हजारों कैथोलिक महिलाएं फाल्स से चलकर शानकिल रोड गईं – जो प्रोटेस्टेंट लोगों का इलाका था. वहां पर प्रोटोस्टेंट महिलाओं ने उनका स्वागत किया.

कुछ ही समय में उनका आन्दोलन पूरे नार्थअर्न आयरलैंड में फ़ैल गया. ज़्यादातर लोग लड़ाई और हिंसा से तंग आ चुके थे. पर फिर भी दंगों को ख़त्म करना इतना आसान नहीं था. दोनों पक्षों के उग्रवादी बन्दूक छोड़ने को तैयार नहीं थे. शांति के लिए किसी भी प्रयास को वे शक की निगाह से देखते थे.

अक्टूबर 1976 में बेट्टी और मेरीड दोनों अमरीका गईं. वहां पर उन्होंने आयरिश-अमरीकी लोगों से अपील की कि वे IRA और अन्य आतंकवादी संगठनों को धन भेजना बंद करें. उनके अनुसार वो सारा पैसा हथियार खरीदने में जाता था. कई अमेरिकन लोगों ने उनकी बात को ध्यान से सुना और फिर शांति स्थापना के लिए चंदा भी दिया. बेट्टी और मेरीड को इसी प्रकार का समर्थन कनाडा, मेक्सिको, यूरोप और अन्य जगहों से भी मिला.

1993 में बेट्टी और मेरीड दोनों एक शांति के मिशन पर बैंकाक, थाईलैंड गईं. उनके साथ कई अन्य नोबल पुरुस्कार विजेता भी थे. आप चित्र में साउथ अफ्रीका के बिशप डेस्मंड टूटू और दलाई लामा को भी देख सकते हैं.

*बेट्टी और मेरीड दोनों ने "वीमेन फॉर पीस" की एक रैली में शांति के लिए भेजे गए सैकड़ों टेलीग्राम पढ़े.*

कुछ ही महीनों में बेट्टी और मेरीड दोनों दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गईं. कैथोलिक और प्रोटोस्टेंट समुदायों के लोगों को एक-साथ लाने और शांति स्थापना के लिए उन दोनों को 1977 में शांति के लिए नोबल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया.

उनके देश की मुश्किलें अभी ख़त्म नहीं हुई थीं. तब बेट्टी और मेरीड ने उग्रवादी समूहों से अपने हथियार नीचे डालने की अपील की. पर उग्रवादियों ने उनकी बात नहीं मानी. उग्रवादिओं ने दोनों महिलाओं को गद्दार और धोखेबाज करार दिया और उन्हें मार डालने की धमकी दी. एक मीटिंग में आतंकवादियों ने उन्हें पीटा. बड़ी मुश्किल से दोनों ने एक चर्च में जाकर शरण ली.

उन सालों के बाद भी बेट्टी और मेरीड दोनों ने शांति के लिए अपने प्रयास ज़ारी रखे हैं. 1978 में उन्होंने अपने आन्दोलन के पदों से इस्तीफ़ा दे दिया. इस बीच कई आयरिश प्रोटोस्टेंट और कैथोलिक लोगों ने टकराव को समाप्त करने का काम किया. 1990 के बाद लम्बे अरसे तक कोई हिंसा की घटना नहीं घटी और सब जगह शांति के प्रस्तावों पर चर्चा हुई. यह नतीज़ा बेट्टी और मेरीड दोनों द्वारा बीस साल पहले शुरू किये शांति प्रयासों से ही संभव हो पाया.

## शांति के लिए उठाए कदम

सितम्बर 1994 को IRA और अधिकांश प्रोटोस्टेंट लोगों के हिंसक समूहों की लड़ाई बंद करने पर सहमति हुई. उससे कोई डेढ़ साल तक शांति बनी रही. इस बीच नार्थअर्न आयरलैंड में स्थाई शांति स्थापना के लिए बहुत से गुटों में बातचीत हुई. फिर फ़रवरी 1996 में दुबारा से हिंसा भड़की. पर नयी शांति वार्ता सितम्बर 1997 में शुरू हुई. यह एक बहुत बड़ी बात थी, क्योंकि सभी पक्षों के लोग एक साथ बैठकर गंभीरता से शांति के लिए प्रयास कर रहे थे.